2

''मैं सुसमाचार सुनाने को उत्सुक हूं''

(रोमियों 1:8-15)

हम रोम के नाम पत्र के पौलुस के परिचय का अध्ययन जारी रख रहे हैं। उसके समय में लिखे जाने वाले पत्र के आरम्भिक शब्दों में आम तौर पर धन्यवाद जोड़ा जाता था। इस पाठ के लिए वचन पाठ ऐसी अभिव्यक्ति के साथ आरम्भ होता है:

> पहले मैं तुम सब के लिए यीशु मसीह के द्वारा अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं, कि तुम्हारे विश्वास की चर्चा सारे जगत में हो रही है। परमेश्वर जिस की सेवा मैं अपनी आत्मा से उसके पुत्र के सुसमाचार के विषय में करता हूं, वही मेरा गवाह है; कि मैं तुम्हें किस प्रकार लगातार स्मरण करता रहता हूं। और नित्य अपनी प्रार्थना में विनती करता हूं, कि किसी रीति से अब भी तुम्हारे पास आने को मेरी यात्रा परमेश्वर की इच्छा से सुफल हो। क्योंकि मैं तुम से मिलने की लालसा करता हूं, कि मैं तुम्हें कोई आत्मिक बरदान दूं जिस से तुम स्थिर हो जाओ। अर्थात यह, कि मैं तुम्हारे बीच में होकर तुम्हारे साथ उस विश्वास के द्वारा जो तुझ में, और तुम में है, शान्ति पाऊं। और हे भाइयो, मैं नहीं चाहता, कि तुम इसके अनजान रहो, कि मैंने बार-बार तुम्हारे पास आना चाहा, कि जैसे मुझे और अन्यजातियों में फल मिला, वैसा ही तुम में भी मिले, परन्तु अब तक रुका रहा। मैं यूनानियों और अन्यजातियों का और बुद्धिमानों और निर्बुद्धियों का कर्ज़दार हूं। सो मैं तुम्हें भी जो रोम में रहते हो, सुसमाचार सुनाने को भरसक तैयार हूं (आयतें 8-15)

इन आयतों में प्रार्थना पर ज़ोर दिया गया है। पौलुस ने अपने पाठकों का धन्यवाद किया यानी वह लगातार उन्हें अपनी प्रार्थनाओं में याद रखता था। परन्तु वह यहां से आगे बढ़ते हुए इससे जुड़े एक विषय पर आ गया। वह उन्हें बताना चाहता था कि उसे उनसे मिलने की कितनी तड़प है और यह कि वह पहले उनके पास क्यों नहीं आ सका। विलियम बार्कले ने लिखा है, ''1900 वर्षों [से अधिक] के बाद उन आयतों की गरमाइश आज भी इनमें मिलती है।''[1] पौलुस के दिल से निकली टिप्पणियों से उसके पाठकों को उसके पत्र और उसे स्वीकार करने के लिए पहले तैयार कर दिया होना चाहिए।

अन्तिम आयत इस प्रस्तुति को दिखाती है: ''सो मैं तुम्हें भी जो रोम में रहते हो, सुसमाचार सुनाने को भरसक तैयार हूं'' (आयत 15)। ''सो'' शब्द यह दिखाता है कि पौलुस ने पहले क्या कहा। NIV में ''इसी लिए मैं प्रचार करने को इतना उत्सुक हूं'' कहा गया है। इस अध्ययन में हम

देखना चाहते हैं कि पौलुस सुसमाचार सुनाने को इतना उत्सुक क्यों था और हमें क्यों होना चाहिए।

पौलुस उत्सुक था (1:8-15)

रोम जाने को उत्सुक

पौलुस अपने और रोम में मसीही लोगों के बीच एक पुल बना रहा था। उनके लिए धन्यवाद व्यक्त करने के बाद (आयत 8) उसने कहा, ''परमेश्वर जिसकी सेवा मैं अपनी आत्मा से[2] उसके पुत्र के सुसमाचार के विषय में करता हूं, वही मेरा गवाह है; कि मैं तुम्हें किस प्रकार लगातार स्मरण करता रहता हूं'' (आयत 9)। पौलुस ने यह पुष्टि करने के लिए कि उसके पाठक उसके लिए कितने महत्वपूर्ण हैं, सबसे गम्भीर शब्दावली (''परमेश्वर ... मेरा गवाह है'') का इस्तेमाल किया। गुड स्पीड के संस्करण में ''जब मैं प्रार्थना करता हूं तो तुम्हारा नाम लेना कभी नहीं भूलता'' है। ध्यान दें कि पौलुस ने अपनी प्रार्थनाओं को उसके साथ नहीं मिलाया, जहां उसने परिश्रम किया था (देखें इफिसियों 1:15, 16; फिलिप्पियों 1:3, 4; 1 थिस्सलुनीकियों 1:2, 3)। वह उन नगरों की कलीसियाओं के लिए भी प्रार्थना करता था जिनमें वह गया नहीं था। जैसे रोम की कलीसिया।

रोम के मसीही लोगों के लिए प्रार्थना करते समय पौलुस लगातार याचना को जोड़ता है: ''और नित्य अपनी प्रार्थना में विनती करता हूं, कि किसी रीति से अब भी तुम्हारे पास आने को मेरी यात्रा परमेश्वर की इच्छा से सुफल हो'' (1:10)। अनुवादित शब्द ''मेरी यात्रा सफल हो'' (*euodoo*) जो नये नियम में कहीं नहीं मिलता, वह शब्द है जो ''मार्ग'' या ''सफ़र'' (*hodos*) के विचार वाले ''अच्छा'' (*eu*) के लिए शब्द को मिलाता है। बैगस्टर की *इंटरलिनियर ग्रीक इंग्लिश न्यू टैस्टामेंट* में ''सुखद यात्रा'' है।[3] पौलुस को रोम के सुखद और सुरक्षित सफ़र की उम्मीद थी। वह मासोकवादी (परपीड़क-कामुक) नहीं था; उसने परेशानी सही थी पर उसने यह चाहा नहीं था या उसके लिए यह यात्रा आनन्द देने वाली नहीं थी।

उसने ज़ोर देकर कहा, ''मैं तुम से मिलने की लालसा करता हूं'' (आयत 11)। पत्र के अन्त के निकट उसने उन्हें बताया, ''बहुत वर्षों से मुझे तुम्हारे पास आने की लालसा है'' (15:23)। जिस शब्द ''*epipotheo*'' से ''लालसा'' शब्द निकला है, उसका अर्थ है ''मिलने की तड़प''[4] होना। 1:11 में MSG का वाक्यांश है: ''प्रतीक्षा की यह तड़प जितनी लम्बी होगी उतना ही दर्द अधिक होगा।''

पौलुस ने एक आपत्ति का पूर्वानुमान लगाया, ''यदि तुम हम से मिलने को इतने बेताब हो तो आए क्यों नहीं ? तुम इतनी बार मकिदुनिया में गए हो जो इटली से अदरिया समुद्र के पार थोड़ी दूरी पर है।'' ''और हे भाइयो, मैं नहीं चाहता (परन्तु अब तक रोका गया), कि तुम इससे अनजान रहो, कि मैं ने बार-बार तुम्हारे पास आना चाहा'' (1:13)। अध्याय 15 में हम उसकी सफ़ाई देखें जो उसमें से रोमी साम्राज्य के पूर्वी भाग में उसे करने के लिए दिए गए परमेश्वर के आवश्यक काम के कारण उसे ''रोका गया'' था।

... यहां तक कि मैं ने यरूशलेम से लेकर चारों ओर इल्लुरिकुम तक मसीह के सुसमाचार

का पूरा-पूरा प्रचार किया। ...

इसी लिए मैं तुम्हारे पास आने से बार-बार रुका रहा। परन्तु अब मुझे इन देशों में [क्योंकि अभी के लिए यहां मेरा काम पूरा हो गया है] और जगह नहीं रही, और बहुत वर्षों से मुझे तुम्हारे पास आने की लालसा है। इसलिए जब इसपानिया को जाऊंगा तो तुम्हारे पास होता हुआ जाऊंगा क्योंकि मुझे आशा है, कि उस यात्रा में तुम से भेंट करूं, और जब तुम्हारी संगति से मेरा जी कुछ भर जाए, तो तुम मुझे कुछ दूर आगे पहुंचा दो (रोमियों 15:19-24)।

इन आयतों में से दो विवरण बाहर आते हैं। पहला यह है कि पौलुस तब भी रोम जाने के लिए प्रार्थना कर रहा था, जब लगा कि परमेश्वर उसकी प्रार्थना का उत्तर ''नहीं'' में दे रहा है। यदि हम किसी चीज़ के लिए प्रार्थना करते हैं तो वह हमें तुरन्त नहीं मिलती तो हमें प्रार्थना करना बन्द नहीं करना चाहिए। निश्चय ही हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि परमेश्वर ने हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर नहीं दिया। ''नहीं'' या ''इससे बेहतर ले ले'' या ''थोड़ी प्रतीक्षा कर'' वाला उत्तर भी ''हां'' के उत्तर जैसा ही है। पौलुस के मामले में परमेश्वर का उत्तर था, ''थोड़ी प्रतीक्षा कर।''

दूसरा पौलुस अपनी इच्छा को परमेश्वर की इच्छा से मिलाने को तैयार था। 1:10 में ''किसी रीति से'' शब्दों पर ध्यान दें। यूनानी का मूल अर्थ ''यदि किसी न किसी तरह ... किसी समय''[5] है। पौलुस इस बात को समझता था कि रोम जाने की उसकी योजनाएं (15:22-32) अस्थाई हैं और परमेश्वर की इच्छा पर निर्भर हैं। 1:10 में उसने लिखा ''नित्य अपनी प्रार्थनाओं में विनती करता हूं कि किसी रीति से तुम्हारे पास आने की मेरी यात्रा परमेश्वर की इच्छा से सफल हो।'' 15:32 में उसने कहा ''और मैं परमेश्वर की इच्छा से तुम्हारे पास आनन्द के साथ आकर तुम्हारे साथ विश्राम पाऊं।'' 1:10 में NCV का अनुवाद है, ''यदि परमेश्वर चाहे तो यह होगा।'' जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट ने लिखा है कि पौलुस ''न अपनी इच्छा परमेश्वर की इच्छा पर थोपने, न यह जानने के लिए दावा करता है कि परमेश्वर की इच्छा क्या हो सकती है। इसके बजाय वह परमेश्वर की इच्छा के सामने अपने आपको दे देता है।''[6] हमें इस मामले में पौलुस जैसे अधिक बनने की आवश्यकता है।

अपना संदेश रोम ले जाने को उत्सुक

अपने समय में रोम जाने की इच्छा करने वाला अकेला पौलुस ही नहीं था। कई नागरिकों का सपना होता था कि वे राजधानी के मुख्य नगर में जाएं। अन्तर यह था कि दूसरे लोग नगर की भव्यता को देखने जाना चाहते थे जबकि पौलुस आत्माओं को जीतने वाले के रूप में जाना चाहता था।[7] वह ''रोम में ... सुसमाचार सुनाने को भरसक तैयार हूं'' (आयत 15) था। हमारे वचन पाठ में उसने अपनी उत्सुकता के कई कारण बताए।

(1) *उस विश्वास के कारण*[8] *जिसे पौलुस चाहता था।* आइए इस पाठ के वचन पाठ की पहली आयत में वापस चलते हैं। पौलुस ने लिखा, ''पहिले मैं तुम सब के लिए यीशु मसीह के द्वारा अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं,[9] कि तुम्हारे विश्वास की चर्चा सारे जगत में हो रही है'' (आयत 8)। ''पहले'' शब्द का अर्थ यह नहीं है कि ''दूसरा'' और ''तीसरा'' होगा। यानी यह केवल इस बात का संकेत है कि पहली बात जो पौलुस करना चाहता था उनका धन्यवाद जुटाना

था। उसने अपने पत्रों का आरम्भ ईमानदारी से तारीफ करते हुए किया (उदाहरण के लिए, देखें 1 कुरिन्थियों 1:4-7)।

रोम में कलीसिया के लिए अपने धन्यवाद के बारे में पौलुस ने इसके आकार या इसके भले कार्यों का उल्लेख किया? नहीं, वह सदस्यों के विश्वास के लिए धन्यवाद कर रहा था: ''मैं ... अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं, तुम्हारे विश्वास की चर्चा सारे जगत में हो रही है।'' ''सारे जगत में'' का अर्थ सम्भवतया पूरे रोमी साम्राज्य में है। जब भी और जहां भी मसीही लोग इकट्ठे होते थे, वे रोम की कलीसिया के विश्वास में बने रहने के लिए आनन्द करते थे। ''रोम अर्थात मूर्तिपूजा या भौतिकवाद या मसीहियत के प्रति बढ़ते द्वेष का केन्द्र रोम से मसीह की ज्योति इतनी तेजी से चमक रही थी कि वहां से पूरे साम्राज्य को दिखाई दे सकती थी।''[10]

रोम की कलीसिया सम्भवतया छोटी थी, परन्तु भाइयों ने विपरीत परिस्थितियों में अपने विश्वास को बनाए रखा (रोमियों 1:21-32)। यह उस माहौल का वर्णन करता है, जिस में वे रहते थे। यह हर जगह मसीही लोगों के लिए प्रोत्साहन देने वाला था। आप में से कइयों के विश्वास को हर रोज चुनौती मिलती है। अनुचित दबाव के बावजूद आपके विश्वास में बने रहने से मुझे और दूसरों से ताकत मिलती है। हम आपकी विश्वासयोग्यता के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देते हैं।

(2) *उस पुष्टि के कारण जो पौलुस दे पाया।* आयत 11 में पौलुस ने एक और कारण बताया कि वह रोम के मसीही लोगों से मिलने को इतना उत्सुक क्यों है ''क्योंकि मैं तुम से मिलने की लालसा करता हूं कि मैं तुम्हें कोई आत्मिक वरदान दूं, जिससे तुम स्थिर हो जाओ।'' हमें पक्का पता नहीं है कि पौलुस अपने पाठकों के साथ कौन सा ''आत्मिक दान'' साझा करना चाह रहा था। यूनानी शब्द (*pneumatikos*) जिसका अनुवाद ''आत्मिक'' हुआ है, का अर्थ हो सकता है कि जो ''पवित्र आत्मा द्वारा दिया गया'' या इसका अर्थ ''मसीही लोगों के आत्मिक जीवन से सम्बन्धित कुछ'' हो सकता है।[11] यह ''आत्मिक जीवन बनाने वाली कोई भी बात'' हो सकती है।[12] यूनानी शब्द (*charisma*) जिसका अनुवाद ''वरदान'' हुआ है ''अनुग्रह'' के लिए शब्द (*charis*) से लिया गया है, जिसका सरल अर्थ दान ही है; नये नियम में इसका इस्तेमाल विशेषकर ''दानों के लिए जो अन्ततः परमेश्वर की ओर से आते हैं'' हुआ है।[13]

कइयों का मानना है कि पौलुस के दिमाग में आश्चर्यकर्म का दान नहीं हो सकता था (जिसे पुराने टीकाओं में ''विशेष'' या ''असाधारण'') दान कहा गया है। वे इस निष्कर्ष पर इसलिए पहुंचते हैं क्योंकि (उनका कहना है) कि ''आश्चर्यकर्म का दान केवल पवित्र आत्मा ही दे सकता है।'' शायद ये इस बात से परिचित नहीं हैं कि ''असाधारण दान प्रेरितों के हाथ रखने से ही दिए जाते थे।''[14] प्रेरितों 8 में हम पढ़ते हैं कि ''प्रेरितों के हाथ रखने से पवित्र आत्मा दिया जाता है'' (आयत 18; देखें आयत 17)। पवित्र आत्मा मसीही लोगों को आश्चर्यकर्म के दान देने के लिए जिम्मेदार था, परन्तु वह यह दान प्रेरितों के द्वारा देता था। जब पौलुस ने इफिसुस में चेलों पर हाथ रखे, तो उन्हें भविष्यवाणी और भाषाएं बोलने के ''विशेष'' दान मिले। (''भाषाएं'' का अर्थ उन भाषाओं को बोलना है, जो उन्होंने सीखी नहीं थीं; प्रेरितों 19:6.) रोम के मसीही लोगों के सम्बन्ध में यह हो सकता है कि पौलुस उन्हें आश्चर्यकर्म के दान देना चाहता हो, जो कइयों के पास पहले से ही हों (देखें रोमियों 12:6-8)।

अन्य इस बात पर ज़ोर देते हैं कि पौलुस 1:11 वाले आश्चर्यकर्म के दान की बात ही कर

सकता था क्योंकि यूनानी शब्द का अनुवाद ''वरदान'' 1 कुरिन्थियों 12:4 में एक वचन में मिलने वाला शब्द है, जिसका अर्थ कुरिन्थुस की कलीसिया के आश्चर्यकर्म के दान हैं। यह दावा करने वाले लोगों को हो सकता है *charisma* शब्द के सामान्य स्वभाव का पता न हो। नये नियम में इसका इस्तेमाल कई तरह से हुआ है। रोमियों 6:23 में यह उद्धार के दान की बात करता है। 12:6-8 में इसका इस्तेमाल आश्चर्यकर्म और बिना आश्चर्यकर्म के दानों के लिए किया गया है। जॉन मुर्रे ने सुझाव दिया कि ''इस्तेमाल की गई अभिव्यक्ति 'कोई आत्मिक वरदान' का अनिश्चित स्वभाव हमें इस विचार को आत्मा के विशेष या आश्चर्यकर्म द्वारा दिए जाने वाले दान तक सीमित नहीं करेगा।''[15]

डग्लस जे. मू के अनुसार, ''पौलुस ने कभी इस अर्थ [आश्चर्यकर्म के दान] के साथ 'आत्मिक' और 'दान' के मिश्रण का इस्तेमाल किया।''[16] इसके अलावा अगली आयत (1:12) इसकी व्याख्या करने वाली लगती है; इसका आरम्भ ''अर्थात'' के साथ होता है। इस आयत का संकेत है कि ''वरदान'' का उद्देश्य रोम के मसीही लोगों के विश्वास को मजबूत करना होना था। विश्वास को मजबूत करने के लिए मुख्य साधन वचन था (आज भी है) (देखें रोमियों 10:17) न कि आश्चर्यकर्मों को करने की योग्यताओं का दिया जाना। जॉन मैकार्थर ने निष्कर्ष निकाला कि 1:11 में पौलुस के दिमाग में ''वह आत्मिक लाभ था जो प्रचार करके, सिखाकर, शांति देकर, प्रार्थना करके, अगुआई देकर और अनुशासित करके रोमी मसीही लोगों में लाया जा सकता था।''[17]

स्टॉट सम्भवतया सही था, जब उसने सुझाव दिया कि ''[पौलुस] की बात पर 'एक जान बूझकर अनिश्चितता' है, शायद यहां पर उसे मालूम नहीं है कि उनकी मुख्य आत्मिक आवश्यकताएं क्या होंगी।''[18] पौलुस *जैसे भी हो* उनकी सहायता करना चाहता था।

वह उन्हें ''कोई आत्मिक वरदान'' (जो भी हो) देना चाहता था ताकि वे ''स्थिर हो'' सकें (1:11ख)। यूनानी शब्द (*sterizo*) जिसका अनुवाद ''स्थिर'' हुआ है। जिसका अर्थ ''ठहराना, तेज करना'' है।[19] यही यूनानी शब्द प्रेरितों 18:23 में इस्तेमाल हुआ है, जहां हमें बताया गया है कि पौलुस ''गलातिया और फरुगिया में सब चेलों को स्थिर करता फिरा।'' हम ''दृढ़ करना'' शब्द का इस्तेमाल कर सकते हैं, जिसका अर्थ ''मजबूत करना, पक्का करना'' है।

मुझे याद आता है कि जब मैं लड़का था तो मेरे पिता किस प्रकार बाड़ को पक्का करते थे। खम्भा नीचे से हिल गया था जिसके कारण बाड़ की तार ढीली हो गई थी। कई बार मुझे उस खम्भे को सीधा करने के लिए उसमें मिट्टी ठूसनी पड़ती थी। कई बार मुझे दूसरी तारों के साथ उस खम्भे को सीधा करना पड़ता था या 2" x 4" वाले बोर्ड के साथ एक और खम्भा जोड़ना पड़ता था। आम तौर पर मुझे पुराना खम्भा निकालकर नया लगाना पड़ता था। उस खम्भे को ''लगाने,'' ''पक्का करने'' के लिए जो भी आवश्यक होता मैं करता था ताकि वह हिले न। इसी प्रकार पौलुस रोम के मसीही लोगों की सहायता के लिए *जो भी करना आवश्यक* हो वह करना चाहता था।

जेम्स मिक नाइट ने सुझाव दिया है कि पौलुस रोम के मसीही लोगों को ''अन्यजातियों के विरुद्ध'' मज़बूत करना चाहता था ''जो [उन्हें] मूर्तिपूजा में वापस लाना चाहते थे और उन यहूदियों से जो [उन्हें] व्यवस्था के अधीन लाना चाहते थे।''[20] लियोन मौरिस ने अवलोकन किया है कि ''पहली सदी के मसीही लोगों का जीवन आसान नहीं था''[21] और यह इक्कीसवीं सदी के

मसीही लोगों के लिए भी आसान नहीं है। हम में से हर किसी को एक-दूसरे को मज़बूत करने की चिंता करनी चाहिए।

(3) *उस संगति के कारण जिसकी पौलुस को आवश्यकता थी।* यह हमें पौलुस के रोम जाने की इच्छा के तीसरे कारण पर ले आता है। उसे मालूम था कि आयत 11 में उसकी बात का गलत अर्थ निकाला जा सकता है यानी ऐसा लग सकता है, जैसे वह अकेला ही हितकारी हो और केवल रोम के लोगों का ही हित हो, ''अर्थात यह कि जब मैं तुम्हारे बीच में होऊं, हम उस विश्वास के द्वारा जो मुझ में और तुम में है, एक-दूसरे से प्रोत्साहन पाएं'' (आयत 12)। अन्य शब्दों में वह कह रहा था कि मैं तुम्हें इसलिए मिलना चाहता हूं क्योंकि इससे केवल *तुम्हें* ही नहीं बल्कि *मुझे* भी सहायता मिलेगी। बाद में उसने कहा कि उसे उसकी संगति में ''विश्राम'' मिलने की उम्मीद थी (15:32)। स्टॉट ने लिखा है:

> [पौलुस] मसीही संगति द्वारा एक-दूसरे को मिलने वाली आशिषों के बारे में जानता है और चाहे वह एक प्रेरित है, पर वह इतना घमण्डी नहीं है कि अपने लिए इसकी आवश्यकता को न माने। आज का मिशनरी जो किसी दूसरे देश में और संस्कृति में जाकर वैसे ही ग्रहण किए जाने के लिए जाता है, देने की तरह ही पाने को उत्सुक है, सीखने के साथ-साथ सिखाने को उत्सुक है, प्रोत्साहित करने के साथ-साथ प्रोत्साहित होने को उत्सुक है, वह कितना ही धन्य है! और धन्य है वह मण्डली जिसमें ऐसे दीन मन वाले [''अगुवे''] हैं![22]

सुधार एक मार्गीय सड़क नहीं है। वर्षों से मुझे उन लोगों द्वारा प्रोत्साहन मिलता है और बहुत कुछ सीखने को मिलता है, जिनमें मैं प्रचार करता हूं। आज *टुथ फ़ॉर टुडे* के लिए लिखते हुए मैं उन लोगों के लिए जो इस पुस्तक को पढ़ते हैं प्रार्थना करता हूं कि उन्हें सहायता मिले। इसके साथ ही मैं अपने पाठकों की प्रोत्साहित करने वाली बातों से दिलेर भी होता हूं।

मसीही होने के नाते हमें एक-दूसरे की आवश्यकता है। हमें इकट्ठे आराधना करने, इकट्ठे काम करने और एक-दूसरे के साथ सामाजिक सम्बन्धों की आवश्यकता है। इससे दूसरों के साथ स्तुति में अपने स्वर ऊपर उठाने में हमें सहायता मिलती है। यह हमें दूसरों को वफ़ादारी से प्रभु की सेवा करते हुए देखने के लिए प्रोत्साहित करता है। यह हमें यह सुनने के लिए मज़बूत करता है कि परमेश्वर की सहायता से दूसरे लोग सताव कैसे सह रहे हैं। क्या आप कभी धधकती हुई आग के सामने खड़े हुए हैं? यदि आप आग में से जलता हुआ अंगारा निकाल लें तो क्या होगा? यह जल्दी ही काला होकर ठंडा हो जाएगा। जब कोई अपने आपको अपने साथी मसीहियों की संगति में से निकाल लेता है तो वह ऐसा ही हो जाता है। परमेश्वर द्वारा कलीसिया को बनाने का एक कारण यह है कि उसे मालूम था कि हमें मसीही जीवन जीने के लिए दूसरों की सहायता की कितनी आवश्यकता पड़ेगी।

(4) *उस फल के कारण जो पौलुस चाहता था।* आयत 13 में पौलुस ने एक और कारण बताया कि वह रोम में क्यों जाना चाहता है, ''... मैंने बार-बार तुम्हारे पास आना चाहा, कि जैसा मुझे दूसरी अन्यजातियों में फल मिला, वैसा ही तुम में भी मिले।'' कई लोग अनुवादित शब्द ''फल'' (*karpos*) अर्थात ''आत्मा के फल'' (गलातियों 5:22, 23) के रूप में करते हैं। उन्हें

लगता है कि पौलुस फिर कह रहा था कि वह मसीही लोगों को आत्मिक रूप से बढ़ने में सहायता करना चाहता है। परन्तु अधिकतर का यह मानना है कि पौलुस ने ''फल'' शब्द का इस्तेमाल ''नये मसीहियों'' के अर्थ में किया। उसे ''रोम में कुछ नये लोगों को जीतने'' की उम्मीद थी।[23] CEV में है ''मैं रोम में मसीह के अनुयायियों को जीतना चाहता हूं।''

सुसमाचार सुनाने का पौलुस का मुख्य उद्देश्य आत्माएं बचाना था (रोमियों 1:15, 16)। 1:15 में अनुवादित शब्द ''सुसमाचार सुनाने'' (*euangelizo*) वह शब्द है जिससे हमें अंग्रेज़ी शब्द ''इवैंजलाइज़'' मिला है; रोम में जाने का पौलुस का उद्देश्य सुसमाचारीय था। उसे रोमी साम्राज्य के पूरे पूर्वी भाग में आत्माओं की फसल काटने की आशीष मिली थी। इसलिए अब वह रोम में भी वैसा ही फल पाने की इच्छा कर रहा था।

(5) *उस लगाव के कारण जो पौलुस में था।* रोम जाने का पौलुस ने अन्तिम कारण यह बताया कि उसे कर्ज़ चुकाना था: ''मैं यूनानियों और अन्यजातियों का और बुद्धिमानों और निर्बुद्धियों का कर्ज़दार हूं'' (आयत 14)।

''यूनानियों और अन्यभाषियों,'' ''बुद्धिमानों और निर्बुद्धियों'' के वर्गों का नाम देना पौलुस के यह कहने का ढंग था कि ''मैं हर किसी के लिए ज़िम्मेदार हूं।'' अधिकतर समाजों ने ऐसे लेबल लगा लिए हैं जो ''हम'' और ''हम नहीं'' (''वे'') में अन्तर करते हैं। यहूदी लोग ''यहूदियों अन्यजातियों'' शब्दों का इस्तेमाल करते हैं। रोमी लोग ''रोमी और काफ़िर'' कहते थे। यूनानियों के लिए यह ''यूनानियों और अन्यभाषियों'' था। पौलुस के समय में यूनानी लोग अपनी संस्कृति और सुरुचि के लिए विश्व प्रसिद्ध थे। इसके विपरीत अन्यभाषी, जिन्हें अंग्रेज़ी में बारबेरियन कहा गया है, अपनी सुसंस्कृत और सभ्यता के लिए इतने प्रसिद्ध नहीं थे। ''अन्यभाषियों'' के लिए अंग्रेज़ी शब्द ''barbarian'' को यूनानी शब्द (*barbaros*) से लिप्यंतरित किया गया है। लिप्यंतरित किया गया है। यह वह शब्द था, जो किसी यूनानी के कान में पड़ने से कठोर, असभ्य विदेशी भाषाओं का शोर सुनाता था।[24] ''यूनानियों और अन्यभाषी'' ''बुद्धिमानों और निर्बुद्धि'' शब्दों का इस्तेमाल करते हुए पौलुस सभ्य और असभ्य अर्थात पढ़े-लिखे और अनपढ़ अर्थात सब लोगों के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी पर ज़ोर दे रहा था।

अनुवादित शब्द ''कर्ज़दार'' (*opheiletes*) किसी दूसरे का कुछ देने का संकेत देता है।[25] यह बकाया कर्ज़ की ओर एक संकेत है (देखें KJV)। AB में आयत 14 के अन्तिम भाग को पढ़ने के लिए विस्तार दिया गया है, ''मुझे एक ज़िम्मेदारी निभानी है और एक कर्तव्य पूरा करता है और एक कर्ज़ चुकाना है।'' पौलुस यह कर्ज़ अपने ऊपर कैसे लिया? उसके दिमाग में मुख्यतया ऐसा कर्ज़ नहीं था, जो व्यक्ति क व्यक्ति ख से उधार लेने के कारण होता है, जिससे व्यक्ति क का तब तक कर्ज़दार रहता है, जब तक वह उस कर्ज को चुका नहीं देता। इसके बजाय उसका कर्ज़ ऐसा था, जो व्यक्ति क व्यक्ति ख को व्यक्ति ग को देने के लिए देता है। इस मामले में ख, ग का ''कर्ज़दार'' है जब तक वह उसे जो ग का है, लौटा नहीं देता। उदाहरण के लिए यदि मुझे किसी ने आपको देने के लिए कुछ रुपये दिए हों, तो मैं उन रुपयों को अपने लिए नहीं रख सकता। नैतिक नीतिगत और कानूनी तौर पर वह रुपया आपको देने की ज़िम्मेदारी मुझ पर है।

यदि पौलुस अपने अतीत पर विचार करता तो वह उन कई लोगों का ध्यान कर सकता था जिनका वह कर्ज़दार था। परमेश्वर के उपाय में उसे यहूदी विरासत, यूनानी शिक्षा और रोमी

नागरिकता मिली थी। सबसे बढ़कर उसे प्रभु का कर्ज़दार होने की बात समझ आनी चाहिए थी। मैं रोमियों 5 में पौलुस के शब्दों को लेता हूं:

> क्योंकि जब हम निर्बल ही थे, तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिए मरा। ... परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रकट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा। ... क्योंकि बैरी होने की दशा में तो उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ फिर मेल हो जाने पर उसके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों न पाएंगे? (देखें आयतें 6-10)।

सबसे बढ़कर जिस बात को पौलुस ने प्रभावित किया था, वह यह अद्‌भुत तथ्य था कि यीशु ने उसे बचाया ही नहीं था, बल्कि उसे सुसमाचार भी सौंप दिया था, जो कि बचाने के लिए परमेश्वर की सामर्थ है (1:16)। मसीह ने उसे शुभ समाचार दिया, ताकि दूसरे लोग प्रभु के पास आ सकें और उन्हीं आशिषों को पा सकें जो उन्हें मिली थीं।

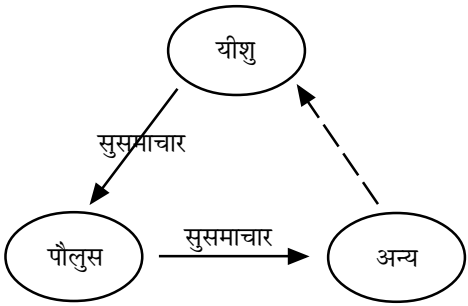

पौलुस ने इस ज़िम्मेदारी को गम्भीरता से समझा। यह उसके जीवन का केन्द्र यानी उसके अस्तित्व का कारण बन गई। कुरिन्थुस के लोगों को उसने लिखा, ''यदि मैं सुसमाचार सुनाऊं, तो मेरा कुछ घमण्ड नहीं; क्योंकि यह तो मेरे लिए अवश्य है; और यदि मैं सुसमाचार न सुनाऊं, तो मुझ पर हाय। ... भण्डारीपन मुझे सौंपा गया है'' (1 कुरिन्थियों 9:16, 17)।

उसने हर जगह सब लोगों के प्रति चाहे उनकी सामाजिक स्थिति, आर्थिक स्थिति, शैक्षणिक स्तर या नीतिगत पृष्ठभूमि, उम्र या लिंग कोई भी क्यों न हो, सब का कर्ज़दार माना। उसने राजाओं और हाकिमों को वचन सुनाया (प्रेरितों 24-26), परन्तु उसने ''दीनों'' को भी वचन सुनाया (रोमियों 12:16; देखें 1 कुरिन्थियों 1:18-31)। वह ''सब मनुष्यों के लिए सब कुछ बना कि किसी न किसी रीति से कई एक का उद्धार कराए'' (1 कुरिन्थियों 9:22)।

इस प्रकार उसने कहा, ''सो मैं तुम्हें भी जो रोम में रहते हो, सुसमचार सुनाने को भरसक तैयार हूं'' (रोमियों 1:15)। यूनानी शब्द (*prothumos*) का अनुवाद ''भरसक तैयार'' तैयारी को दिखाता है।[26] डी. स्टुअर्ट ब्रिस्को ने टिप्पणी की है:

> रोमी पत्री लिखने के समय पौलुस लगभग तीस वर्ष के दौड़ा-दौड़ी वाले और कमज़ोर कर देने वाले वर्षों से सक्रिय रूप में सेवकाई में लगा हुआ था। उसने काफ़ी कठिनाई सही और अधिकतर लोगों के लिए लगभग आधा दर्जन जीवनकाल तक रहने वाले सदमे और

उत्तेजना को देखा था। ... तौभी उसका जोश किसी भी तरह से कम नहीं हुआ था।[27]

क्या हम भरसक तैयार हैं

क्या हमें अपने कर्ज़ का पता है ?

मैं रोम जाने की पौलुस की दृढ़ इच्छा से चकित हुए बिना यह नहीं पढ़ सकता, ''क्या हम उसकी तरह ही सुसमाचार बांटने के लिए भरसक तैयार हैं ?'' कहा जाता है कि पौलुस दूसरों को सिखाने को *ज़िम्मेदारी* मानता था, जबकि हम में से कई लोग इसे *विकल्प* मानते हैं।

हमें यह समझने की आवश्यकता है कि हम पर भी खोए हुओं की ज़िम्मेदारी है। पौलुस की तरह हम भी बहुत से लोगों के कर्ज़दार हैं यानी उन सब के जिन्होंने हमें सिखाया और यहां तक पहुंचाया है ! सबसे बढ़कर हम अनन्तकाल तक उसके कर्ज़दार हैं, जिसने ''[हम] से प्रेम किया और हमारे लिए आपने आपको दे दिया'' (इफिसियों 5:2)। यह वही है जिसने हमें सुसमाचार सौंपा है कि हम इसे संसार के सब लोगों के पास ले जाएं (मत्ती 28:18-20; मरकुस 16:15, 16)। यदि हमारा पड़ोसी भूखा और हमारे पास खाना हो तो क्या उसे खाना देना हमारी ज़िम्मेदारी नहीं होगी ? यदि हमारे पास किसी भयंकर बीमारी का इलाज हो, तो दुखी संसार को वह इलाज बताना हमारी ज़िम्मेदारी नहीं होगी ? उस समाचार को जो लोगों की आत्माओं को बचा सकता है, बांटने की हमारी कितनी बड़ी ज़िम्मेदारी होनी चाहिए ?

मेरी प्रचार की पहली पूर्णकालिक सेवकाई ग्रेटर ओक्लाहोमा नगर के गांव की एक मण्डली के साथ थी। उन वर्षों के दौरान बपतिस्मा लेने वाले दो लोगों में बेकर्स परिवार का एक डॉक्टर और उसकी पत्नी थी। उनकी आवाज़ में हैरानी थी, जब उन्होंने मुझे कहा, ''हमारे लिए सबसे हैरानी की बात यह है कि हमें सच्चाई को जानने का अवसर मिला है, जबकि बहुत से ऐसे लोग हैं, जिन्हें कभी अवसर नहीं मिलता। फिर उन्होंने कहा, हमें इतनी आशीष मिली है, इसलिए हमें जितने लोगों को बताया जा सके, बताने की बड़ी ज़िम्मेदारी लगती है।''

क्या मुझे यह ज़ोर देने की आवश्यकता है कि हमारी ज़िम्मेदारी सब लोगों के लिए है ? ''अपने जैसे'' लोगों के बीच में रहते हुए हमें कोई दिक्कत नहीं है, पर हमारी चिन्ता यहीं पर न रुक सकती है और न रुकनी चाहिए। हमें उस कर्ज़ को जो ''यूनानियों और अन्यभाषियों का, और बुद्धिमानों और निर्बुद्धियों का है, कभी भुलाना नहीं चाहिए'' (रोमियों 1:14)

लोग चाहे कहीं भी रहते हों, आम सहमति यही है कि कर्ज़ चुकाया जाना चाहिए। अमेरिका में उन लोगों के लिए जो अपने कर्ज़ चुकाने से बचने की कोशिश करते हैं, अनादरपूर्वक शब्दों का इस्तेमाल किया जाता है, जैसे मरा हुआ पशु।'' यान मैक्लेरन ने कहा कि ''कर्ज़ चुकाना हमारे लिए बहुत बड़ी खूबी नहीं है। हमें उसके लिए प्रशंसा पाने की उम्मीद नहीं करनी चाहिए। न ही हमें यह चुनने की आज़ादी है कि हम क्या करें या क्या नहीं। यदि हम नहीं चुकाते तो हम बेईमान हैं, इससे अधिक कुछ नहीं।''[28] क्या हम खोये हुओं के लिए कर्ज़ को महसूस करते हैं ? क्या हम उस कर्ज़ को चुकाने की कोशिश कर रहे हैं ?

क्या हम सुसमाचार बांटने को भरसक तैयार हैं ?

हो सकता है कि हमें अपने कर्ज़ का पता हो; हो सकता है कि हमें दूसरों को सिखाने की अपनी ज़िम्मेदारी का अहसास हो। परन्तु क्या हम पौलुस की तरह इसे चुकाने को भरसक तैयार हैं ? आमतौर पर जिन पर अधिक ज़िम्मेदारी होती है, वे सबसे कम तैयार लगते हैं। हम अनिच्छुक, आशंकित, यहां तक कि उदासीन हो सकते हैं, पर तैयार नहीं।

हमें दूसरों को बहुत से कारणों से सिखाने को भरसक तैयार होना चाहिए। हमें उसके कारण जो सुसमाचार *दूसरों के लिए* करेगा, भरसक तैयार होना चाहिए। इससे उनकी आत्माएं बचाई जाएंगी। यह उन्हें इस जीवन में सामर्थ देकर आने वाले जीवन के लिए तैयार करेगा।

एक प्रचारक अस्पताल में मरीजों से मिलने जा रहा था। बरामदे में किसी मरीज के बिस्तर से चार्ट लेकर एक आदमी भागा हुआ आया। उसने प्रचारक का हाथ पकड़ते हुए उसे चार्ट दिखाया और कहा, ''देखो! उसका बुखार कम हो रहा है!'' प्रचारक को कुछ पता नहीं था कि वह आदमी कौन है या मरीज कौन है। उसने उस आदमी को दोबारा कभी नहीं देखा, पर वह उसे कभी नहीं भूल पाया, जो शुभ समाचार से इतना प्रभावित हुआ था कि उसे उस पहले अजनबी को जिसने उसे देखा था छोड़कर उसे बताया था।[29]

हमें सुसमाचार को उसके कारण भी जो यह हमारे लिए करेगा, दूसरों को बताने के लिए भरसक तैयार रहना चाहिए ...

- हम उसके लिए जो प्रभु ने हमारे लिए किया है और धन्यवाद करेंगे।
- आत्माओं के बचाए जाने को देखकर आनन्दित और मजबूत होंगे।
- यह जानकर कि हम प्रभु की बात मान रहे हैं, बड़ी संतुष्टि पाएंगे।
- पौलुस और दूसरों के जैसे हो जाएंगे, जैसे जो खोए हुओं के लिए जोश से भरे थे।

सारांश

दो लड़कियां बहस कर रही थीं कि बाइबल की अन्तिम पुस्तक कौन सी है। एक ने कहा, ''मुझे लगता है कि यह तीमुथियुस के साथ समाप्त होती है।'' दूसरी लड़की ने अपना सिर हिलाया। ''यह तीमुथियुस के साथ समाप्त नहीं होती। यह तो रेवोल्यूशन्स के साथ समाप्त होती है।''[30] हो सकता है बाइबल ''रेवोल्यूशन्स (Revolutions) नामक पुस्तक से समाप्त न होती हो पर यह रेवाल्यूशनरी अर्थात क्रांतिकारी से समाप्त होती है।'' रोमियों की पुस्तक क्रांतिकारी है। इसका संदेश समझ आने और उसे अपने मनों पर लागू करने पर हमें भी दूसरों को सुसमाचार बताने की ज़िम्मेदारी का अहसास होता है और हम भरसक तैयारी से इसे सुनाएंगे!

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

इस पाठ के लिए वचन पाठ कई प्रासंगिकताओं के लिए अपने आपको देता है। मैंने मिशन कार्य के लिए प्रोत्साहित करने के लिए कई अवसरों पर इन आयतों का इस्तेमाल किया है। यह किसी नई मण्डली में जाने पर परिचय के रूप में दिए जाने वाले सरमन का अच्छा आधार हो सकता है। रोम की बड़ी विश्वासी कलीसिया की बात करते हुए मैं मण्डली के इतिहास की समीक्षा

करता हूं। मैं उम्मीद करता हूं कि इकट्ठे रहने के समय हम उन्हें आशीष देंगे पर उन्हें आश्वस्त करता हूं कि इससे मुझे भी आशीष मिलेगी। यह ध्यान दिलाते हुए कि मेरा पहला समर्पण सुसमाचार सुनाने के लिए ही रहेगा, मैं मण्डली की सहायता के लिए हर सम्भव प्रचार करने की प्रतिज्ञा करता हूं। मैं पौलुस की योजनाओं की अनिश्चितता का ध्यान दिलाते हुए समाप्त करता हूं: उसे मामलों को परमेश्वर के हाथ देना आवश्यक था। ''वैसे ही हमें नहीं मालूम कि इस मण्डली का भविष्य क्या है, पर हम उसे जानते हैं, जिसके हाथ में भविष्य है। आइए हम अपने आपको उसकी इच्छा पर छोड़ दें।''

टिप्पणियां

[1]विलियम बार्कले, *दि लैटर टू द रोमन्स,* संशो. संस्क., दि डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1975), 5. [2]पौलुस ने परमेश्वर की सेवा केवल बाहरी तौर पर ही नहीं, बल्कि मन से भी की। दि NCV में है, ''जिसकी सेवा मैं अपने पूरे मन से करता हूं।'' [3]*दि इंटरलीनियर ग्रीक-इंग्लिश न्यू टैस्टामेंट: दि नेसले ग्रीक टैक्सट विद ए न्यू लिटरल इंग्लिश ट्रांसलेशन बाय एलफ्रेड मार्शल* (लंदन: शमुएल बैगस्टर एण्ड सन्स, 1958), 603. KJV में है ''खुशहाल सफ़र।'' [4]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ. अंगर, एण्ड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 376. [5]*द इंटरलीनियर ग्रीक-इंग्लिश न्यू टैस्टामेंट,* 603. [6]जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट, *दि मैसेज ऑफ़ रोमन्स: गॉड'स गुड न्यूज फ़ॉर द वर्ल्ड,* दि बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइ: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1994), 56. [7]वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, *दि बाइबल एक्सपोज़िशन कमैंट्री,* अंक 1 (व्हीटन, इलिनोइस: विक्टर बुक्स, 1989), 516. [8]इस भाग के पांच में से तिरछे किए गए चार शीर्षक लैरी डीयसन, ''*राइटियसनेस ऑफ़ गॉड*'': ऐन *इन-डेप्थ स्टडी ऑफ़ रोमन्स,* संशो. (क्लिफटन पार्क, न्यू यॉर्क: लाइफ कम्युनिकेशंस, 1989), 51-52 से लिया गया। [9]''यीशु मसीह के द्वारा'' मसीह की मध्यस्थता पर ज़ोर देता है (1 तीमुथियुस 2:5; देखें इफिसियों 5:20; कुलुस्सियों 3:17; इब्रानियों 13:15; 1 पतरस 2:5)। [10]चार्ल्स आर. स्विन्डल, *कमिंग टू टर्म विद सिन: ए स्टडी ऑफ़ रोमन्स 1-5* (अनाहिम, कैलिफोर्निया: इनसाइट फ़ॉर लिविंग, 1999), 11.

[11]जैक कॉटरल, *रोमन्स,* अंक 1, कॉलेज प्रैस NIV कमैंट्री सीरीज़ (जौपलिन, मिज़ोरी: कॉलेज प्रैस पब्लिशिंग कं., 1996), 93. [12]लियोन मौरिस, *दि एपिस्टल टू द रोमन्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 60. [13]कॉटरल, 93. [14]चॉर्ल्स हौज, *रोमन्स,* दि क्रॉसवे क्लासिक कमैंट्रीज़ (व्हीटन, इलिनोइस: क्रॉसवे बुक्स, 1993), 25. [15]जॉन मुर्रे, *दि एपिस्टल टू रोमन्स,* अंक 1, दि न्यू इंटरनैशनल कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1968), 22. [16]डग्लस जे. मू, *दि एपिस्टल टू द रोमन्स,* दि न्यू इंटरनैशनल कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1996), 59. अंग्रेज़ी की बाइबलों में 1 कुरिन्थियों 12:1; 14:1 में ''आत्मिक दान'' वाक्यांश मिलता है, पर ''दान'' शब्द इटैलिक किया हुआ है। ''दान'' शब्द यूनानी धर्मशास्त्र में नहीं है; इसे अनुवादकों द्वारा जोड़ा गया है। [17]जॉन मैकार्थर, , दि मैकार्थर न्यू टैस्टामेंट कमैंट्री (शिकागो: मूडी प्रैस, 1991), 43. [18]स्टॉट, 57. चार्ल्स ई. बी. क्रेनफील्ड, *ए क्रिटिकल एण्ड एक्सेजेटिकल कमैंट्री ऑन द एपिस्टल टू द रोमन्स,* अंक 1 (एडिनबर्ग, टी एण्ड टी. क्लार्क, 1983),79 से उद्धृत ''ऐन इन्टरनैशनल इनडेफिनिटनेस।'' [19]वाइन, 206. [20]जेम्स मैक्नाइट, *ए न्यू लिटरल ट्रांसलेशन, फ्रॉम द ऑरिजनल ग्रीक ऑफ़ ऑल द अपॉस्टलिकल एपिस्टल्स विद ए कमैंट्री एण्ड नोट्स* (पृष्ठ नहीं: तिथि नहीं; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1984), 57.

[21]मौरिस, 60. [22]स्टॉट, 57. [23]वही। [24]एफ. एफ. ब्रूस, *दि लैटर ऑफ़ पॉल टू द रोमन्स,* दि टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 73. [25]वाइन, 150. [26]वही, 508.

[27]डी. स्टुअर्ट ब्रिस्को, *मास्टरिंग द न्यू टैस्टामेंट: रोमन्स,* द कम्युनिकेटर'स कमैंट्री सीरीज़ (डॅलास: वर्ड पब्लिशिंग, 1982), 34. [28]डेविड एफ. बर्गेस, संक., *इन्साइक्लोपीडिया ऑफ़ सरमन इलस्ट्रेशन्स* (सेंट लुइस: कॉन्कोर्डिया पब्लिशिंग हाउस, 1988), 67. [29]*इलस्ट्रेटिंग पॉल'स लैटर टू रोमन्स,* संक., जेम्स एफ़. हाईटॉवर (नैशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1984), 10 में उद्धृत रोजर लोवेट। [30]रेय एफ. चेस्टर, ''दि पावरफुल गॉस्पल,'' अबिलेन क्रिश्चियन कॉलेज एनुअल बाइबल लेक्चर (1959), 41-42 से उद्धृत।